शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

छायावादोत्तर युग की कविता : एक विहंगावलोकन

सीमा मिश्र
सहायक प्राध्यापक (हिंदी विभाग)
राम मूर्ति स्मारक महाविद्यालय
अम्बेडकरनगर
अवध विश्वविद्यालय
अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

छायावादी युग की रचनाओं में जो प्रकृतिचित्रण व्यापक एवं प्रभावी ढंग से किया गया है उसका छायावादोत्तर युग की कविता में अभाव दिखाई देता है। छायावादोत्तर काव्य की प्रमुख संवेदनाओ में आदर्श और यथार्थ भावुकता और बौद्धिकता, सूक्ष्मता और मांसलता तथा उदात्तता और लघुता की अभिव्यक्ति का द्वंद्व स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। छायावादोत्तर युग की काव्य धारा में व्याप्त इसी लौकिकता एवं मानवीयता के विश्लेषण प्रस्तुत शोध पत्र की विषय-वस्तु है।

मुख्य शब्द : *छायावादोत्तर युग, भगवती चरण वर्मा, छायावादी कविता*

प्रस्तावना

समसामयिक परिस्थितयों का जितना अधिक प्रभाव छायावादोत्तर युग में पड़ा उतना न छायावादी कविता में और न ही नयी कविता में। युग के यथार्थ चिंतन से प्रभावित होकर सुमित्रानन्दन पन्त ने युगान्त (1936) की रचना की, तो निराला जो पहले से ही प्रगतिशील थे 'जागो फिर एक बार' लिखकर देश की राजनीतिक परिस्थिति एवं आर्थिक दशा से अवगत कराया।

उनकी कविता 'बादल राग' को यदि 'कुकुरमुत्ता' की पृष्ठभूमि माना जाय तो 'राम की शक्ति पूजा' तथा 'तुलसीदास' देश की परतन्त्रता की व्यथा कथा है।

'रह गया राम रावण का अपराजेय समर' शक्ति पूजा का वह सूत्र-वाक्य है जिसका सम्बन्ध राजनीतिक और आर्थिक परिस्थितियों से जोड़ा जा सकता है। छायावादी रचनाकारों की प्रगतिशीलता के अनुशीलन काल में सुमित्रानन्दन पन्त के काल पर विहंगम दृष्टीपात किये बिना यह प्रकरण अधूरा ही रह जायेगा।

'उत्तरा' की भूमिका में उन्होंने मार्क्सवाद के प्रभाव को स्वीकार किया है। इसी प्रकार 'ग्राम्या', 'युगवाणी' तथा 'लोकयतन' में वे अपने समाज का यथार्थ परक चित्र खींचना चाहते हैं। छायावादी काल की प्रकृति के सुकुमार कवि की कविताओं में 'ग्राम युवती' का चित्र विशेष चर्चा का विषय रहा है।

छायावादोत्तर युग की कविता पर विहंगम दृष्टिपात करने के लिए हमें क्रमशः उत्तर छायावादी काव्य, राष्ट्रीय कविता, तथा प्रगतिवादी कविता पर भी दृष्टी डालना चाहिए।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

उत्तर छायावादी कविता

उत्तर छायावादी काव्य उन कृतियों से सम्बंधित है, जिनमें छायावाद की रोमानी संवेदना - विरह और करुणा की भावना को आवेग तथा विद्रोह से युक्त गीतों के माध्यम से आवेगमयी भावाकुलता के साथ किया जाता है। उत्तर छायावाद के प्रमुख कवि डॉ राम कुमार वर्मा, भगवती चरण वर्मा, डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन', रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' तथा राम धारी सिंह दिनकर हैं। इन कवियों को मुख्य प्रेरणा पन्त, प्रसाद, निराला और महादेवी से मिली है। पन्त की कविता 'ग्राम युवती' पन्त की परवर्ती कविताओं में प्रगतिशीलता और छायावादी काल की समन्वित भंगिमा विद्यमान है। उनकी कविता 'मानव' का उत्तर छायावादी रूप - "सुन्दर है विहँग सुमन सुन्दर" कहने वाले कवि युगान्त में 'मानव तुम सबसे सुन्दरतम' लिखकर एक बार पुन: 'प्रकृति' के सौन्दर्य लोक से बाहर आकर मानवीय सौन्दर्य का चित्र खीचा है, जो उनकी आरम्भिक कृति 'ग्रंथि' की मूल संवेदना रही है।

युग बाहु प्रलम्ब प्रेम बन्धन,
आँखें है दो लावण्य लोक
स्वर्ग में निसर्ग संगीत सार।
पृथु उर उरोज ज्याँ सर सरोज,

इन पंक्तियों का सम्बंध प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से न तो आर्थिक जीवन से है और न देश की राजनीतिक दशा से किन्तु इस सम्बंध में यह ध्यातव्य है कि उत्तरछायावादी रचनाकार किस प्रकार अपनी सम सामायिक समस्याओं को नजरअन्दाज करने के लिए नारी के अंगों का सहारा लेते हैं। "खींचती उबहनी वह वरवस: खिचते हैं युग रस भरे कलस" का बिम्ब ग्रंथि की प्रेमिका को पुन: कविता में स्थान देने का प्रयास है। डॉ प्रेमशंकर लिखते हैं "ग्रामयुवती एक प्रभावी कविता है जिसके आरम्भ में उन्मत्त यौवन से उभर घटा सी नव उषाढ सी सुन्दर इठलाती आती ग्राम युवती वह गज गति सर्प-डगर पर।[1]

सन 1935-1936 ई. के दिनों में गाँधी जी का प्रभाव तिरोहित होने लगा था और समीक्ष्य धारा के कवियों की उदीयमान लालसा उन्हें नारी रूप वैभव के निकट जाने लगी। इन दिनों की स्वाधीनता संग्राम की असफलता तथा इंग्लैंड की शासन सत्ता द्वारा भारतवासियों को मंत्रीमण्डल में स्थान देने के प्रलोभन के बावजूद भारतवासियों को धोखा ही दिया गया। जिसकी निराशा ने कवियों को पलायनवादी बना दिया। राजनीतिक क्षेत्र की निराशा की भावना उन्हें अंतर्मुखी बनाती है और अर्थ के आभाव से ये कवि अपने समाज से मुँह मोड़ लेते हैं 'ग्राम्या' की एक कविता में पन्त 'आँखों' की भंगिमा का चित्रण करते हैं। छायावाद युग में वर्ण्य विषय के रूप में विद्यमान इन आँखों का वर्णन रीतिकाल से छायावाद तक हुआ है किन्तु उत्तर छायावाद में आँखों का वर्णन कवियों के यथार्थबोध से एकाकार कराता है।

श्री भगवती चरण वर्मा उत्तरछायावाद के गीतकार के रूप में जाने जाते हैं। इनकी प्रसिद्ध कविता 'भैसा गाडी', बैसवारे के ग्रामीण जीवन की निर्धनता की परिचायक है।

चरमर- चरमर- चूं- चरर- मरर जा रही
चली भैंसागाड़ी!
गति के पागलपन से प्रेरित चलती रहती
संसृति महान,
सागर पर चलते हैं जहाज, अंबर पर
चलते वायुयान,
पर इस प्रदेश में जहां नहीं
उच्छवास,भावनाएं चाहे, वे भूखे अधखाये किसान,

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भर रहे जहां सूनी आहें, नंगे बच्चे,
चिथरे पहने, माताएं जर्जर डोल रही,
है जहां विवशता नृत्य कर रही,धूल
उड़ाती हैं राहें!
भर-भरकर फिर मिटने का स्वर,कंप-कंप
उठते जिसके स्तर-स्तर,
हिलती-डुलती,हंफती-कंपती, कुछ रुक-
रुककर, कुछ सिहर-सिहर,
चरमर- चरमर- चूं- चरर- मरर जा रही
चली भैंसागाड़ी!

इस क्षेत्र में उन दिनों अन्य वाहनों का प्रयोग कम होता था और ग्रामीण युवकों की मस्ती का आलम ऐसे ही साधनों के प्रयोग द्वारा पूर्ण होता था। उनकी एक अन्य कविता है -

हम दिवानो की क्या हस्ती
है आज यहाँ कल वहां चले
मस्ती का आलम साथ चला,
हम धूल उड़ाते जहाँ चले।

कुछ दीवानगी कुछ फक्कडपना और कुछ रीति रिवाज के बन्धन से मुक्त होने की नवयुवकों की भावना अपनी धुन में मस्त इन कवियों के वर्णन का आधार है। इन कवियों का उदेश्य रहा है आनन्द की प्राप्ति। छायावादी कवि अपने प्रणय सम्बन्धो को गोपनीय रखने के लिए प्रतीकों का सहारा लेते हैं किन्तु उत्तर छायावाद का काव्य - नायक सोचता है कि 'मै छिपाना जानता हूँ जग मुझे साधू समझता ऐसी ही वृद्ध जग को उनकी जवानी क्यों खिलती है। उन्हें इसी का अधिक एतराज रहता है।

उत्तर छायावाद में प्रवृत्तितगत समानता होने पर भी रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की काव्य भंगिमा दिनकर और शिवमंगल सिंह 'सुमन' से भिन्न है। 'अंचल' की प्रमुख काव्य कृतियाँ 'मधूलिका' 'अपराजिता' और 'लाल चुनर' है। आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने 'अंचल' की कविता में जीवित क्रान्ति का लक्षण देखा है। वे लिखते हैं- खुमारी मादकता तथा उत्तेजना ही उनकी देन है। यघपि विषय विवाद ग्रस्त हो सकता है किन्तु मेरे मन से इस विषय में शंका नहीं है कि 'अंचल' में ह्रासोन्मुख प्रतिगामिता नहीं जीवित क्रान्ति के लक्षण हैं। 'अंचल' के स्वरों में प्रसुप्त और क्षीण नहीं जागृत और प्रदीप्त अतृप्ति का विह्वल रोदन है।"[2] देश और काल की राजीनीतिक परिस्थितियों से निराश होकर उत्तर छायावादी गम गलत करने के लिए प्रेम की शरण में जाते हैं। प्रगतिशील कवियों का प्रभाव भी 'अंचल' पर पड़ा है।

डॉ. कमला प्रसाद ने स्वछंदतावाद के अग्रिम चरण को 'उत्तरछायावाद' कहा है। वे लिखते है- 'एक ओर छायावाद शिखर पर था दूसरी ओर कवि कुछ ऐसी तान सुनाते जिससे उथल पुथल' मच जाये।" अथवा 'हम दीवानों की क्या हस्ती हम आज यहाँ कल वहाँ चले' (भगवती चरण वर्मा) जैसी मस्ती। ये कवि साहित्य की प्रतियोगिता में पन्त, प्रसाद, निराला से अपने को हीन नहीं मानते"[3] आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी भी उत्तर छायावाद के सम्बन्ध में कहते हैं, "इन्द्रियता के सम्बंध में उत्तर छायावादी काल स्थूल भूमि पर नहीं उतरता उसकी अभिव्यक्तियाँ उच्च मानसिक स्तर पर है और अधिकांश छाया कहीं न कहीं जैसे पन्त की उच्छवाद की बालिका और 'ग्रन्थि' के वर्णनों में जहाँ साकारता आये बिना नहीं रही वहां भी सांकेतिक रखी गयी है।"[4] वाजपेयी जी का यह निर्णयात्मक कथन सत्य होने पर भी 'उत्तर छायावादी कविता' में मस्ती का आलम युवकों को निश्चिन्तता की ओर ले जाता है। उत्तर छायावाद के कवि हरवंश राय बच्चन की काव्य कृतियों के सम्बन्ध में कविता

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 अप्रैल 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

कोमुदी (भाग-2) में पंडित राम नरेश त्रिपाठी ने कहा था कि बच्चन और दिनकर दोनों प्रतिद्वंदी कवि हैं। बच्चन की भाषा दिनकर से ज्यादा जोरदार है, दिनकर के भाव बच्चन से अधिक उन्मादक और सारवान और सामयिक हैं। दोनों में जो एक दूसरे को पहले ग्रहण कर लेगा वही हिन्दी कविता के वर्तमान और अगले युग का नेता होगा।"[5] बच्चन के गीतों में मांसल सौदंर्य का चित्रण रूमानी अंदाज में हुआ है। किन्तु 'अंचल' पर समकालीनता का दबाव अधिक देखा जाता है। 'अंचल' ने लिखा है -

उर में आगनयन में पानी, होठों में मुस्कान सजा
हम हँसते इतराते चलते इतरा-इतरा बल खा खा
अपनी तरणी फेंक प्रलय की
लहरों में खुल खेले हम
आज भाग्य के उल्का पातो को
हँस हँस कर झेले हम [6]

नरेश मेहता लिखते हैं कि - "रूमानीपन और दैहिक मांसलता से वह कभी बाहर न निकल सके। प्रगतिशीलों के दबाव में समकालीन माहौल के प्रभाव से 'लालचुनर' आदि उनके काव्य संग्रह प्रकाशित हुए किन्तु नरेन्द्र शर्मा या गिरिजा कुमार माथुर की यह काव्य भूमि नहीं थी उसी प्रकार अंचल का विद्रोह भी केवल कागज़ी था।"

निष्कर्ष

उत्तर छायावाद की इन कृतियों के अनुशीलन से यह निष्कर्ष निकलता है कि अपनी समकालीन राजनीतिक परिस्थितियों से निराश होकर ये कवि प्रेम और मांसल सौन्दर्य की ओर उन्मुख होते हैं। इनकी मादकता मदिरा के उस नसे की तरह है जो नशा उतरने के बाद ही यथार्थ का अनुभव करते है। अरमानों की आहुतियाँ डाल कर ये कवि विरह की आग जलाया करते हैं, किन्तु विवशता की दशा में यह आग ही सहारा बनती है। इन कवियों की संवेदना प्रकारान्तर से छायावाद और प्रगतिवाद का सन्धि स्थल है। इसमें - 'ज्यों-ज्यों पीता नशा उमड़ता जाता' की भंगिमा है और दीन दुनियाँ से ऊब कर ये कवि 'मादकता' का एक अस्थायी सहारा लेते हैं। प्रेम उसी का उत्पादन है तथा प्रेम और मस्ती से भरपूर ये रचनाएँ पाठकों के मन में गहरे बैठ गए। आज भी जो इन्हें पढता है उस पर ये अपना प्रभाव अवश्य छोडती है।

सन्दर्भ सूची

1. हिन्दी स्वछंदवादी काव्य, डॉ० प्रेमशंकर, पृष्ठ 275
2. हिन्दी साहित्य: बीसवीं शताब्दी, आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, पृष्ठ 198
3. आधुनिक हिन्दी कविता और आलोचना की द्वंदात्मकता, डॉ. कमला प्रसाद
4. हिन्दी साहित्य बीसवीं शताब्दी, आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी, पृष्ठ 194
5. हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास डॉ राम स्वरुप चतुर्वेदी द्वारा उधृत पृष्ठ 186
6. अंचल के गीत पंक्तियाँ